गाथा (GAATHA)
स्त्री अस्मिता और विमर्श की सहकर्मी-समीक्षित, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

ISSN : 3049-3463(Online)
Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No.- 51-54
©2025 Gaatha
https://gaatha.net.in
Author :

डॉ. कुमारी आभा

असिस्टेंट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, शांति प्रसाद जैन महाविद्यालय सासाराम, रोहतास, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा.

Corresponding Author :

डॉ. कुमारी आभा

असिस्टेंट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, शांति प्रसाद जैन महाविद्यालय सासाराम, रोहतास, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा.

'बसंती' उपन्यास में स्त्री का सामाजिक यथार्थ

'बसंती' उपन्यास भीष्म साहनी की अप्रतिम रचना है जिसमें पुरुष प्रधान समाज के भंवरजाल में तड़पती छटपटाती स्त्री की मर्मान्तक पीड़ा को उकेरा गया है। गरीबी की मार झेलती बसंती किस तरह पिता, प्रेमी, दोस्त, रिश्तेदार के हाथों निरंतर छली जाती हुई प्रताड़ना की शिकार बनकर रह जाती है, उसकी जीती जागती तस्वीर प्रस्तुत की गयी है। उसे न तो पिता का प्यार मिलता है न पति का सुख और न रिश्तेदार का आश्रय। वह एक हाथ से निकलकर दूसरे हाथ में लुढ़कने को अभिशप्त है। अंततः पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के दलदल में उलझकर रह जाती है।

ऐसा नहीं कि बसंती एक कुरुप लड़की है जिसे कोई पसंद नहीं करता। वह पतली, छरहरी, चंचल और खुशमिजाज लड़की है। हर लड़की की तरह उसकी भी बाल सुलभ इच्छाएं हैं। लेकिन गरीबी की मार ने उसकी इच्छाओं पर पानी फेर दी है। इसलिए बचपन से ही वह हर दर्द को हंसकर पीना सीख चुकी है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि वह हर जुल्म को हंसते हुए स्वीकार कर लेगी। उसमें भले बुरे की समझ भी है। इसलिए जब भी उसे लगता है कि उसके साथ अन्याय या जुल्म हो रहा है तो वह उससे दामन छुड़ाने का हर संभव प्रयास करती है।

बसंती के पिता काफी गरीब हैं। गरीबी ने उसे इस तरह तोड़ दिया है कि वह अपनी ही बेटी को अल्प वय में ही किसी के हाथ में सौंप देने को विवश है। वह सोचता है कि जब वह सयानी हो जाएगी तो तिलक-दहेज़ देना पड़ेगा। इसलिए वह बसंती को एक वृद्ध लंगड़े बुलाकी राम के हाथों 1400 रुपये में सौंपने का निर्णय कर लेता है। 800 नगद लेकर सौदा पक्का कर देता है। जब बसंती को यह मालूम होता है तो वह सन्न रह जाती है। वह नादान जरुर है पर मूर्ख नहों। कच्ची उम्र में भी उसे इस बात का एहसास है कि शादी के नाम पर जिस बूढ़े के हांथ मुझे सौंपा जा रहा है वह मेरे योग्य नहीं है। उसके साथ मेरी जिंदगी

नरक में तब्दील हो जाएगी। वह इससे निजात पाने का उपाय सोचने लगती है। अचानक एक दिन रमेश नगर में झोंपड़ी तोड़ने वाले आते हैं। उसी दिन उसकी बूढ़े विकलांग बुलाकी के साथ शादी होने वाली थी। मौके का फायदा उठाकर वह घर से भाग जाती है।

लुकते-छिपते, गिरते-भागते वह श्यामा बीबी के घर में दाखिल होती है। श्यामा बीबी उसे पनाह देती है और उसे इस तरह घर से अकेले भागने का कारण जानना चाहती है। बसंती अपनी आपबीती सुनाती है --- " जिस दिन हमारी बस्ती तोड़ने आयी थी बीबी जी, उस दिन हमारी शादी होने वाली थी। आपको मालूम है, बस्ती तोड़ने वाले नहीं आते तो इस वक्त मैं क्या कर रही होती ?"[1] वह पूरी घटना को सिलसिलेवार ढंग से कह सुनाती है। श्यामा बीबी को भी एक सहारे की आवश्यकता थी। इसलिए वह बसंती को अपने आश्रय में रख लेती है। बसंती को इस बात का सुकून मिलता है कि उसे उस लंगड़े बूढ़े से मुक्ति मिल गयी। वह सोचती है कि मेरे साथ जो कुछ भी हो रहा है वह केवल गरीबी का परिणाम नहीं है। पिता चाहते तो किसी गरीब लड़के से शादी कर सकते थे। लेकिन नहीं, उन्हें तो मुझसे ज्यादा पैसे का लोभ था जिसके लिए मेरा सौदा किए।

किन्तु यहाँ भी दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता है। बसंती को पता चलता है कि उसके पिता और होने वाला बूढा एवं लंगडा पति उसे ढूंढ रहे हैं तो वह अपने बचपन के दोस्त दीनू के साथ साइकिल पर सवार होकर उसके घर चली जाती है। लेकिन वहाँ भी बसंती को वह मान सम्मान नहीं मिलता है जिसकी उसे चाहत थी। दीनू पहले से ही शादी शुदा था। वह बसंती को रखैल के रुप में घर में छिपा कर रखता था। दिन में वह गंदगी युक्त अँधेरी कोठरी में पड़ी रहती थी। बसंती को यह मंजूर नहीं था। वह दीनू को शादी के लिए विवश करती है। न चाहते हुए भी वह राजी हो जाता है। बसंती शादी के लिए गुलाब का फूल और कृष्ण भगवान् की छोटी ताबीज वाली तस्वीर लाकर आँगन में रखती है जिसे दीनू ने दिया है। चाँदनी रात और टिमटिमाते तारों के बीच खड़ी होकर और उसी को साक्षी मानकर शादी के बंधन में बंध जाती है। इस पूरे परिदृश्य पर लेखक कहता है--- " यह अभिनय भी था, खिलवाड़ भी था, विवाह भी था, विवाह का स्वांग भी था, और भावी दाम्पत्य जीवन के लिए नारी हृदय की सहमी-सहमी सी भाव-विह्वल प्रार्थना भी थी, सबकुछ था और आकाश में चाँद भी खिला हुआ था जो जीवन की प्रत्येक वास्तविकता को अपने आँचल में लेकर जादुई और रहस्यपूर्ण बना देता है।"[2]

बसंती के लिए तो यह सच्ची शादी थी किन्तु दीनू के लिए मात्र खिलवाड़ था। बसंती को यहाँ आने का वह मतलब नहीं था जो दीनू के मन में था। वह अपने को दीनू की दुल्हन समझती थी, लेकिन दीनू उसे सिर्फ भोग्या समझता था। उसके मन में रुखापन और क्रूर कामोत्तेजना के सिवा कुछ नहीं था। जब वह घर छोड़कर इस उम्मीद के साथ भागी थी बड़ी दीदी जिस जहालत भारी जिंदगी जी रही थी मुझे उससे मुक्ति मिल गयी। इसलिए वह गर्व का अनुभव भी करती थी कि जिसे दीदी न कर सकी उसे मैंने कर दिखाया। किन्तु आज पति के उपेक्षा पूर्ण निर्मम व्यवहार से वह क्षुब्ध थी।

दुर्भाग्य जल्दी पीछा नहीं छोड़ता है। इसी बीच एक और घटना घटती है। दिनू को ऑफिस से निकाल दिया जाता है। विवश हो वह बसंती को लेकर अपने दोस्त बरडू के खोखे में चला जाता है। कुछ दिनों तक वहीँ रहता है। अचानक एक दिन वह बसंती को बरडू के हाथों 300 रुपये में बेंच देता है और खुद भागकर अपने गाँव पहली पत्नी के पास चला जाता है। बसंती को जब पता चलता है तो वह बरडू से पूछती है ----- "तेरे पास इतने पैसे कहाँ से आए बरडू, रहता तो खोखे में है ?"[3]

बसंती सोचने लगती है कि जिस दुःख-दर्द के कारण घर से भागी थी वह और भी असहनीय होता जा रहा है। करूँ तो क्या करूँ ? जब पीड़ा सीमा से बाहर हो गया तो वह वहाँ से भी भाग गयी और अपनी बहन के यहाँ शरण ली। स्त्री कहीं भी चली जाय पुरुष की गंदी निगाहों से बच नहीं सकती। बसंती के जीजा उसे गलत निगाहों से घुरना शुरु

कर देते हैं। इसे लेकर वह काफी चिंतित रहती है। सच में स्त्री एक बार लुढ़कती है तो निरंतर लुढ़कती जाती है। उसे सहारा देने वाला कोई नहीं मिलता है जो सच्चे दिल से प्यार करे और सम्मान दे। भारतीय समाज की यह विडंबना है कि पति चाहे कितना भी क्रूर, अत्याचारी, अपाहिज और बूढा मरणासन्न क्यों न हो उससे अलग रहकर कोई औरत सम्मान के साथ नहीं जी सकती है। बसंती उसी विडंबना को भोग रही है। पिता ने बूढ़े बुलाकी राम के हाथों बेचा तो दीनू की शरण ली। दीनी बरडू के हाथों बेचा तो जीजा के घर में शरण ली। जीजा भी वैसा ही निकला तो वह कहाँ जाय ? अगर पिता के घर जाती है तो बुलाकी राम के गले बाँध दी जाएगी। इसी चिंता में वह रात-दिन घुटती जा रही है। समस्या तब और भी जटिल हो जाती है जब वह दीनू के बच्चे की माँ बनने वाली होती है।

जब कहीं भी रोशनी नजर नहीं आती है तो वह पुनः श्यामा बीबी के यहाँ चली जाती है। उसे उम्मीद होती है कि कम से कम वहाँ किसी दरिन्दे की शिकार नहीं होगी। श्यामा बीबी ममता की प्रतिमूर्ति लगती है। उसकी ममतामयी स्नेह से प्रेरित हो बसंती ने उससे सारी आपबीती सूना देती है। श्यामा बीबी को जब मालूम होता है कि बसंती माँ बनाने वाली है तो उसकी ममता और बढ़ जाती है। उसे इस बात की चिंता सताने लगाती है कि कहीं उसका बाप और बरडू यंहां तक न चला आए। इसलिए वह बसंती को अपनी सहेली के घर 17 नंबर फ़्लैट में भेज देती है जहां वह सुरक्षित रुप से बच्चे को जन्म दे सके। श्यामा बीबी की सहेली के पति सूरी साहब नेक दिल इंसान थे। वे बसंती को बेटी की तरह मानते हैं। बसंती के लिए आँगन में खाट लगा देते हैं जहां वह आराम से रह सके। पर हाय रे दुर्भाग्य ! दो दिन बाद ही पता लगाते बसंती के पिता अपने दामाद के साथ सूरी साहब के घर पहुँच जाते हैं। वे जबरन घर में प्रवेश कर अकड़ते हुए कहते हैं ---- " मै बसंती का बाप हूँ साहब।"[4]

उसके अकड़ को देखकर सूरी साहब कहते हैं----- " अब आए हो बेटी का सुध लेने ? पहले कहाँ थे जब वह जगह-जगह धक्के खाती फिर रही थी ?"[5]

सूरी साहब में इंसानियत कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे बसंती के बाप को काफी खरी खोटी सुनाते हैं कि आपको अपनी ही बेटी को कसाई के खूंटे में बांधते ज़रा भी शर्म नहीं आई। पुनः वे बसंती को समझाते हुए कहते हैं ------ " अपनी इस हालत को देखते हुए तुम्हें अपने घर वालों के पास ही रहना चाहिए। अच्छे है, बुरे हैं, जैसे भी हैं, हैं तो तेरे अपने।"[5]

कहा जाता है कि इंसान जिससे जितना ही दूर भागता है नियति उसे उसी मोड़ पर खड़ा कर देती है। बसंती अपने वजूद की रक्षा के लिए न जाने कहाँ-कहाँ भटकती रही। लेकिन आज वह पुनः वहीँ खड़ी है जहां से वह भागी थी। बसंती के पिता उसी बुलाकी राम के हाथों बसंती को सौंपते हुए कहते हैं---- "लड़की अब तेरी है बुलाकी राम। तेरे साथ जबान दी थी सो पूरी की।"[6]

एक दिन बसंती अपने लंगड़े पति और बच्चे के साथ बाजार जा रही थी। अचानक उसकी नजर दीनू पर पड़ती है। उसे देखकर वह सन्न रह जाती है। बुलाकी राम आगे-आगे चल रहा था और बसंती पीछे-पीछे। वह दीनू को एक टक निहारती है और कहती है --- दीनू लो यह तुम्हारा बेटा पप्पू। फिर वह दीनू के साथ उसके घर चली जाती है जहां उसकी पहली पत्नी रहती है। बसंती दीनू से प्यार करती है। वह उसे पति समझती है, क्योंकि उसकी गोद में उसी का बच्चा है। लेकिन दीनू उसे रखैल से ज्यादा कुछ नहीं समझता है। यही कारण है कि जब बसंती दीनू से पूछती है ---- " तू किसे उठा लाया है ? यह तो जाहिल है, कुछ भी नहीं जानती। यह तो घर से निकलते ही रास्ता भटक जाएगी। इसे तो सीखाना पड़ेगा।"[7] तो दीनू आग बबूला हो जाता है और बसंती को जोरदार तमाचा जड़ देता है। एक शादी-शुदा बीबी के बारे में रखैल कुछ भी कहे यह पति बर्दास्त कैसे कर सकता है ? अबतक बसंती यही समझती थी कि उसका बेटा साथ है तो वह इज्जत करेगा। पर यहां तो सबकुछ व्यर्थ निकला। मैं ही पागल थी जो इस नालायक को पति मान

बैठी। बावजूद इसके वह कहाँ जाती ? वह दीनू और उसकी पत्नी को ही अपना आश्रय दाता मानकर घर की पूरी जिम्मेदारी संभालने लगी। दीनू और उसकी पत्नी रुक्मी आराम फरमाते और बसंती रात-दिन खटती रहती।

निष्कर्षतः इस उपन्यास के माध्यम से भीष्म साहनी ने भारतीय समाज की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की है जिसमें स्त्री को दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता है। पुरुष हजार अनैतिक कार्य करते हुए भी पवित्र बनकर समाज में शान के साथ जी सकता है जबकि स्त्री घर से निकलते ही अपवित्र और चरित्रहीन समझ ली जाती है। यदि पिता गरीबी के बोझ तले दबा हो तो बेटी कोढ़ में खाज की तरह असह्य वेदनाकारक बन जाती है। यह पुरुष प्रधान समाज की सबसे बड़ी समस्या है जिसे बसंती के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

सन्दर्भ सूची :

1. 'बसंती', भीष्म साहनी, पृष्ठ-37.
2. वही, पृष्ठ-69.
3. वही, पृष्ठ-97.
4. वही, पृष्ठ-109.
5. वही, पृष्ठ-111.
6. वही, पृष्ठ-117.
7. वही, पृष्ठ-150.

•